International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

गांधी दर्शन में ग्राम स्वराज की राजनीतिक अवधारण–

डॉ0 दुलारी राम मीना

सह–आचार्य (राजनीति विज्ञान)

राजकीय महाविद्यालय खण्डार,स0मा0 (राज0)

.

महात्मा गाँधी दार्शनिक अराजकतावादी है, अतः वे आदर्श स्थिति 'राज्यविहीन समाज' को मानते है परन्तु यह लक्ष्य प्राप्त करना असंभव होने के कारण, इन्होंने इसे केवल एक आदर्श के रूप में ही स्वीकार किया है।

उन्होने ऐसा उप–आदर्श हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया, जिसे प्राप्त करना सम्भव है, जो मूलतः अहिंसा पर आधारित है, इसे गाँधी जी, विकेन्द्रित ग्राम– स्वराज्य' कहते है। इस लक्ष्य को भी क्रमिक सुधारों तथा लोगों के दृष्टिकोण में मौलिक परिवर्तन लाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। राज्य की सत्ता सेवक के रूप में होगी। [1]

1. शासकीय संरचनाः–आदर्श लोकतान्त्रिक व्यवस्था को गाँधी जी ने ग्राम स्वराज्य की संज्ञा दी है। उन्होने गाँव को राजनीतिक व्यवस्था की स्वायत्त और आत्म–निर्भर ईकाई बनाने पर बल दिया है। उन्होनें कल्पना की कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकेन्द्रीकरण और आत्मनिर्भरता इस व्यवस्था के आधार होंगे। [2] इस व्यवस्था में ग्राम अपनी आर्थिक और राजनीतिक विकेन्द्रीकरण और आत्म निर्भरता इस व्यवस्था के आधार होंगे तथा अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने ही साधन अपनायेगा तथा अपनी सुरक्षा के लिये यथासंभव बाहरी सहायता को अपने साधनों से ही पूरा करेगा। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं होगा कि उसका दूसरा गामों से कोई संबंध नही होगा। ये स्वायत्त, स्वशासी और आत्मनिर्भर ग्राम, अपनी उन आवश्यकताओं के लिये जिनकी पूर्ति ग्राम में की ही नहीं जा सकती, दूसरे ऐसे ही ग्राम राज्यों के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

स्वैच्छिक सहयोग पर निर्भर करेगें किन्तु स्वयं भी अन्य ग्रामों को ऐसा सहयोग उपलब्ध कराने के लिये सदैव तत्पर रहेंगे।

एक राष्ट्रीय राज्य के रूप में देश ऐसे स्वतंत्र ग्राम स्वराज्यों का एक संघ होगा ग्राम स्वराज्यों के एक संघ के रूप में भारत के राजनीतिक ढांचे को स्पष्ट करते हुए गॉधी जी ने कहा कि – '' भारत में सात लाख गॉव है। प्रत्येक गॉव को उसके निवासियों की ईच्छा के अनुसार संगठित किया जायेगा। ग्राम, जिला प्रशासन के लिये प्रतिनिधियों का चुनाव करेगें। इस चुनाव में प्रत्येक गॉव का एक वोट होगा। जिलों के प्रतिनिधि प्रान्तीय प्रशासन का निर्वाचन करेगे और प्रान्तीय प्रतिनिधि राष्ट्रपति का निर्वाचन करेगें जो कि राष्ट्र का कार्यकारी होगा।'' [3]

व्यवहारिक दृष्टि से समाज में शांति एंव व्यवस्था की स्थापना के लिये राज्य की उपस्थिति आवश्यक है परन्तु हिंसा पर आधारित होने के कारण इसे एक आवश्यक बुराई के रूप में ही स्वीकार किया है। व्यक्ति के नैतिक विकास की दृष्टि से यह आवश्यक है कि राज्य की शक्ति और प्रभाव को सीमित कर दिया गया है। यदि राज्य अनैतिकता का समर्थक बन जाए, तो व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह ऐसे राज्य के प्रति अपनी निष्ठा का अन्त कर दें और उसके प्रति अहिंसात्मक असहयोग या सविनय अवज्ञा के द्वारा अपना विरोध प्रकट करें। राज्य का सर्वोत्तम लक्ष्य जनकल्याण है।

उपरोक्त व्यवस्था में प्रान्तीय और राष्ट्रीय स्तर की व्यवस्थापिकाऍ और कार्यपालिकाऍ केन्द्रीकृत शक्ति का प्रयोग नहीं करेगी। क्योंकि वास्तविक विधायी और कार्य-पालिका शक्तियॉ तो ग्रामों ओर जिलों के स्तर पर प्रयुक्त की जायेगी। ये संस्थाऐ तो केवल ऐसे अवशिष्ट विषयों में हस्तक्षेप करेगी, जो ग्राम गणराज्यों के मध्य समन्वय के लिए आवश्यक हो अथवा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों से सम्बन्धित हो। ये

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

व्यवस्थापिका भी अपनी शक्ति की श्रोत स्वयं नही होगी, अपितु अपनी शक्तियॉ निचले स्तरों से प्राप्त करेगी तथा ये शक्तियॉ जनता में निहित रहेगी।

इस व्यवस्था में उत्कृष्ट नैतिकता नागरिकों के व्यवहार व विचारों को प्रेरित करेगी। धर्म से निर्दिष्ट होने के कारण प्रत्येक नागरिक अपने अधिकारों से अधिक अपने सामाजिक दायित्वों को महत्व प्रदान करेगा। गॉधी जी ने कहा–''यह समाज के भीतर एक वृत्त का एक समूह होगा और सबसे भीतर के वृत के केन्द्र में व्यक्ति रहेगा। जो अपने निकटवर्ती वृत अर्थात ग्राम के हित में त्याग करने के लिये तैयार रहेगा। यह ग्राम अपने निकटस्थ वृत अर्थात कुछ ग्रामों के समूह के लिए त्याग करने को तत्पर रहेगा और अन्त में इसमें अर्न्तव्याप्त लोककल्याण की भावना ऐसे मनुष्यों की विराट समष्टि में विलीन हो जायेगी जो अहंकारी नहीं अपितु विनीत होगें।''

गाँधी जी ने राजनीतिक शक्ति के केन्द्रीकरण को हिंसा की संज्ञा दी। उन्होंने प्रतिपादित किया कि एक विकेन्द्रित राजनीतिक प्रणाली ही अहिंसा के आदर्श के अनुरूप मानी जा सकती है। आदर्श लोकतान्त्रिक व्यवस्था को गॉधी जी ने ग्राम स्वराज्य की संज्ञा दी। उन्होनें ग्राम को राजनीतिक व्यवस्था की स्वायत्त और आत्मनिर्भर इकाई बनाने पर बल दिया। उन्होनें कल्पना की कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकेन्द्रीकरण और आत्मनिर्भरता इस व्यवस्था के आधार होगें।

गॉधी जी ने राजनीतिक ग्राम स्वराज्य का विचार उनके राज्य रहित लोकतन्त्र के आदर्श के समीप पहुॅचता है। वे उस राज्य को श्रेष्ठ मानते है जो कम से कम शासन करता है।[4] महात्मा गॉधी व्यवहारिक आदर्शवादी थें, वे राज्य रहित लोकतन्त्र के आदर्श की व्यवहारिक उपयोगिता समझते थें, वे इसलिए उन्होंने ग्राम स्वराज्य का विचार प्रस्तुत किया।' ग्राम–स्वराज्य में राज्यों का अन्त नहीं होता, परन्तु राज्य का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

विकेन्द्रीकरण होता है।' इस प्रकार ग्राम स्वराज्य एक ऐसा आदर्श है जिसे सिद्ध किया जा सकता है– '' वह राज्य के अन्त जैसा बहुत दूर का लक्ष्य नहीं।''

एक राष्ट्रीय राज्य के रूप में देश ऐसे स्वतन्त्र ग्राम गणराज्यों का एक संघ होगा। गॉधी जी ने अनुभव किया कि विकेन्द्रीकृत ग्राम स्वराज्य की संकल्पना की क्रियान्विति के लिए क्रमिक सुधारों तथा जनता के दृष्टिकोण में क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता होगी।

गॉधी जी भारत में सच्चे लोकतन्त्र की स्थापना चाहते थें। इसीलिए उन्होने कहा था– '' सच्चा लोकतन्त्र केन्द्र में बैठे बीस व्यक्तियों द्वारा नही चलाया जा सकता उसे प्रत्येक गॉव के लोगों के नीचे से चलाना होगा। ग्राम स्वराज्य ने ग्राम पूर्ण सत्तायें भोगने वाला एक विकेन्द्रीत राजनीतिक घटक होगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का सरकार अथवा शासन से सीधा सम्बन्ध होगा। गॉव का शासन चलाने के लिये प्रत्येक वर्ष गॉव के पॉच व्यक्तियों की

एक पंचायत चुनी जायेगी। दूसरे के लिए एक अल्पमत निर्धारित योग्यता वाले गॉव के वयस्क स्त्री–पुरूषों को अपने पंच चुनने का अधिकार होगा। इस पंचायत को सब प्रकार की आवश्यक सत्तायें और अधिकार प्राप्त होंगे। इस ग्राम स्वराज्य में दण्ड की कोई व्यवस्था नहीं होगी, इसलिए यह पंचायत धारा सभा, न्याय सभा और व्यवस्थापिका सभा तीनों कार्य संयुक्त रूप में करेगी।''

ऐसी शासन पद्धति में नागरिक सत्ता द्वारा नियन्त्रित न होकर स्वयं नियन्त्रित होगे। नागरिक प्रत्येक कार्य अपनी सूझबूझ से करेगें और जीवन की सारी बातों के लिए सरकार की ओर ताकने वाले न होकर उत्तरदायित्व की उच्च विकसित भावना रखने वाले होगें।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

अतः राजनीतिक प्रणाली को तत्काल विकेन्द्रीकरण के इस आदर्श के अनुरूप नहीं ढाला जा सकता।

इस प्रकार गॉधी की कल्पना का ग्राम स्वराज्य एक सच्चा और शक्तिशाली लोकतन्त्र है, जो आज की शासन पद्धतियों के साथ जुडी हुयी अनेक राजनीतिक बुराईयों का रामबाण इलाज है। ऐसा सच्चा विकेन्द्रित लोकतन्त्र सम्पूर्ण मानव जाति के लिए उद्धार संदेश देने वाला होगा।

गॉधी जी की मान्यता है कि जब व्यक्ति अपने जीवन में अहिंसा के आदर्श को पूर्णतः चरितार्थ कर लेगा और स्वयं को परम सत्य के प्रति समर्पित कर लेगा तो उसका उत्कृष्ट विवेक और जाग्रत अन्तरात्मा उसके सारे व्यवहार को ऐसे नैतिक प्रभाव से आच्छादित कर लेंगे कि उसके आचरण पर बाहरी नियन्त्रण अनावश्यक ओर निरर्थक हो जायेगे।

ऐसी अवस्था में व्यक्ति अपना शासन स्वयं हो जाएगा। किन्तु स्वयं पर उसका शासन अन्य लोगो के लिए बाधक बन ही नही सकेगा, क्योंकि अपनी अन्तरात्मा से निर्दिष्ट होने के कारण व्यक्ति तो समुदाय के हितों के प्रति पूर्ण समर्पण को अपने जीवन का लक्ष्य मान लेगा। अपनी अन्तरात्मा से शासित व्यक्ति, मनुष्य मात्र के साथ अपनी आध्यात्मिक एकता को पूरी तरह आत्मसात कर लेगा और दूसरों के हितों के लिए अपने हितों ओर व्यक्तित्व तक का बलिदान कर देने की तत्परता को ही स्वयं के कल्याण के रूप में परिभाषित कर लेगा। अतः गॉधी जी की परिकल्पना की यह आदर्श राजनीतिक व्यवस्था, एक' आत्मनिर्भर स्वशासी व्यक्ति' है।

गॉधी जी की दृष्टि में राजनीतिक सत्ता अपने आप मे कोई साध्य नहीं थी,परन्तु लोगों के लिये जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी स्थिति सुधारने की क्षमता प्राप्त करने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

का एक साधन मात्र थी। इसलिए अपने प्रसिद्ध ' वसीयतनामे' में गॉधी ने कहा था कि '' भारत ने राजनीतिक स्वतन्त्रता तो प्राप्त कर ली है, लेकिन उसे अभी शहरो ओर कस्बो से भिन्न अपने सात लाख गॉवो के लिये सामाजिक, आर्थिक और नैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना अभी शेष है।''

उसी 'वसीयतनामे' में ग्राम स्वराज्य अथवा पंचायत राज का चित्र और कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया है, जो सम्पूर्ण राजनीतिक सत्ता भोगने वाला एक अहिंसक, स्वावलम्बी और स्वयं पूर्ण आर्थिक घटक है। गॉधी जी का ग्राम स्वराज्य मानव केन्द्रित है।

गॉधी जी के अनुसार– हिंसा और दमन कभी भी एक लोकतान्त्रिक व्यवस्था का आधार नहीं बन सकते। उनका मत है कि वास्तविक लोकतन्त्र को जीवन के उच्चतर मूल्यों से अनुप्राणित होना चाहिये। उन्होनें कहा– ''संवैधानिक और लोकतांत्रिक शासन तब तक एक दिवास्वप्न है, जब तक कि अहिंसा को शासन व्यवस्था की मूल शक्ति और अक्षुण्ण आस्था नहीं बनाया जा सकता।''

गॉधी जी ऐसी लोकतान्त्रिक पद्धति पर बल दिया, जिसमें अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के वर्गीकरण असंगत हो जाएं और राजनीतिक संस्थाऍ एक साथ सबके हितों को सुनिश्चित कर सकें। गॉधी जी के अनुसार ' सच्चा लोकतंत्र' तो वह है जिसमें ' सर्वोदय' शासन के पवित्र उद्देश्य के रूप में प्रतिष्ठित हो। [5]

आदर्श गॉवः–आदर्श गॉव भारत में इस तरह से बसाया और बनाया जाना चाहिये। जिससे वह सम्पूर्णतया नीरोग रह सकें। उसके झोंपड़ी और मकानों में काफी प्रकाश और वायु आ–जा सकें। ये ऐसी चीजों से बने हो तो पॉच मील की सीमा के अन्दर उपलब्ध हो सकती है। इस मकान के आस–पास इतना बडा ऑगन हो, जिसमें

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

गृहस्थ अपने लिए साग–सब्जी लगा सकें। सबके लिए प्रार्थना घर या मंदिर हो, सार्वजनिक सभा आदि के लिये एक अलग स्थान हो, गॉव की अपनी गोचर–भूमि हो, सहकारी ढंग की एक गौशाला हो, ऐसी प्राथमिक और माध्यमिक शालाऍ हो जिनमें औधोगिक शिक्षा सर्वे प्रधान वस्तु हो और गॉव के अपने मामलों का निपटारा करने के लिए एक ग्राम पंचायत भी हो। अपनी

आवश्यकता भर अनाज, साग–सब्जी, फल, खादी आदि सभी गॉव में उत्पादित हो। यही गॉधी जी का आदर्श गॉव है।

गॉधी जी की कल्पना में देहात या शहरी किसी प्रकार का भेद नहीं होगा। तथा सभी शुद्व एंव जागृत चेतना युक्त होंगे। गॉव की सफाई व्यवस्था स्वयं पर निर्भर करेगी वहॉ हैजा, प्लेग, चेचक जैसी महामारियॉ फैलेगी। सभी शारीरिक श्रम करेंगे, किसी प्रकार का ऐशो–आराम नहीं करेंगे। [6]

गॉधी जी ने आदर्श ग्राम समुदायों का भी अपने लेखो में संक्षिप्त वर्णन किया। उन्होनें लिखा कि प्रत्येक गॉव पूरे अधिकारों से सम्पन्न एक पंचायत या जनतन्त्र होगा। प्रत्येक गॉव स्वावलम्बी होगा ओर इस योग्य होगा कि वह अपने मामलों का प्रबन्ध यहॉ तक कर सकें कि सम्पूर्ण संसार से अपनी रक्षा भी वह स्वयं कर लें। बाहरी आक्रमण के विरूद्व अपनी रक्षा करने के प्रयत्न में उसे मरने की शिक्षा मिलेगी ओर वह इसके लिए तैयार रहेगा। अगणित ग्रामों से निर्मित इस सामाजिक संगठन में व्यक्ति ग्राम के लिए और ग्राम–ग्राम–समुदायों के लिए मरने को तैयार रहेगा। इस प्रकार सम्पूर्ण संगठन में व्यक्तियों से विनिर्मित एक समग्रता होगी। इन ग्राम–समाजों का प्रत्येक कार्य यथासंभव सहकारिता के अनुसार होगा। अपरिग्रह तथा शरीर श्रम के आदर्शो पर प्रतिष्ठित यह समाज कृषि प्रधान होगा और सभ्यता को अपनाएगा। शोषण

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 11, November- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939|

और पूंजीवाद तथा मालिक–नौकर के कृत्रिम सम्बन्धों का अभावा होगा। उत्पादन ग्रामीण उधोग धन्धो द्वारा होगा। बडे–बडे कारखाने नही होगे। लेकिन ऐसे सादे औजारो और मशीनो का स्वागत होगा जो बिना बेकारी बढाये लाखो ग्रामीणों के बोझ हो हल करते है और जिनको गॉवो के निवासी बना सकते हैं और काम में ला सकते है। 7

अहिंसक मनुष्यों में गम्भीर झगडे ही बहुत कम होंगे और जो होंगे भी तो इनका निपटारा आपसी विवेचना से तथा समझाने–बुझाने से कभी–कभी पंचायतों से और यदि ये साधन काफी न हो तो अहिंसक प्रतिरोध से हो जायेगा। जीवन सरल, प्राकृतिक और संयमित होने से आज के अनेक रोगों का नाम भी नहीं रहेगा और जो छोटी–छोटी बीमारियॉ रह जायेगी। उनके इलाज के लिए प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियॉ होगी।

इस प्रकार गॉधी का ग्राम स्वराज्य ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा जो अपनी महत्व की जरूरतो के लिए अपने पडोसी पर भी निर्भर नहीं करेगा और फिर भी बहुत सी जरूरतों के लिए दूसरों का सहयोग अनिवार्य होगा। उसमें वह परस्पर सहयोग से काम लेगा। इस प्रकार प्रत्येक ग्राम का यह कार्य होगा कि वह अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति अपने ग्राम स्तर पर ही कर सकें।

संदर्भः–

1. रामनाथ 'सुमन' : गाँधीवाद की रूपरेखा, पृष्ठ 73

2. आचार्य कृपलानीः महात्मा गॉधी पृष्ठ 86

3. कलैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गॉधीः खण्ड 76, पृष्ठ 437

4. एम.के.गॉधीः हरिजन सेवक 25 जुलाई 1946

5. गॉव–गॉव में स्वराज्यः अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ प्रकाशन, ले. विनोबा, पृष्ठ 17

6. मोहनदास करमचन्द गॉधीः यंग इण्डिया, 13 दिसम्बर 1924, पृष्ठ 378

7. एम.के.गॉधीः हरिजन, पृष्ट 343